REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 11 | ISSUE - 5 | FEBRUARY - 2022

बौद्ध धर्म दर्शन में मानवता एवं विज्ञानवाद की वर्तमान में प्रासंगिकता

डॉ. विजय कुमार
असि. प्रोफेसर – प्राचीन इतिहास विभाग,
इन्द्रासन सिंह स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी राजकीय महाविद्यालय, पचवस, बस्ती।

शोध सारांश –

तथागत गौतम बुद्ध ने अपनी देशना से भारत की धार्मिक विचारधाराओं को दिशा देने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। भगवान बुद्ध ऐसे भारतीय मानव चिंतक थे। जिन्होने भारतीय परम्पराओं को स्थापित किया और विश्व को अपने धर्म की ओर आकर्षित होने के लिए बाधित किया। इतिहास की पृष्ठभूमि पर धार्मिक और दार्शनिक दृष्टि से बौद्ध धर्म में दो सम्प्रदाय हुए थे – हीनयान और महायान। यान शब्द का अर्थ है सवारी, घोड़ा गाड़ी, गमनागमन या अभियान। इस प्रकार महायान का अर्थ हुआ – वह बड़ी सवारी, जिस पर सवार होकर प्राणी निर्वाण तट तक पहुँच सकते हैं। महायान का दूसरा नाम बोधिसत्वयान या बुद्धयान है। यह ज्ञान की पूर्णावस्था है। गौतम बुद्ध ने समाधि की अवस्था प्राप्त करने के लिए ध्यान साधना का मार्ग दिया है। इसके लिए चित्त वृत्तियों का अंतःमुखी होना आवश्यक है अर्थात् किसी की निन्दा न करना, किसी के साथ घात न करना, भिक्षु के आचरण में सीमित रहना, परिणाम जानकर अर्थात् सीमित मात्रा में भोजन करना, एकान्त स्थान में शयन करना तथा उठना–बैठना एवं मन को चारों ओर से हटाकर योग में लगाना, ध्यानस्थ होना यह बुद्धों की ज्ञानियों को शिक्षा है।

मानवतावाद और वैज्ञानिकता मे घनिष्ट संबंध है क्योंकि दोनों ही वस्तुनिष्ठ होते हैं। बौद्ध धर्म में मानवतावाद और वैज्ञानिकता ही इसके स्वरूप का निर्धारण करते हैं। गौतम बुद्ध दार्शनिक और विचारक ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण मानव जाति के लिए करूणावान वैद्य थे। उनकी देशना में वैज्ञानिकता चरम पर रही है इसी कारण से बौद्ध धर्म विश्व का ऐसा प्रमुख धर्म है जो अंधविश्वासों और कर्मकाण्डों से परे रहा है। लोगों का आध्यात्मिक उन्नयन हुआ यद्यपि कालान्तर में दूषित वातावरण का प्रभाव इस पर भी पड़ा जिसके फलस्वरूप इसके वैज्ञानिक स्वरूप का अध्ययन परम आवश्यक है। कालान्तर में बौद्ध धर्म की महायान शाखा ने भक्ति और पूजा के मार्ग को प्रचलित करते हुए इस धर्म में निहित वैज्ञानिक तत्वों को भी बचाये रखने का हर सम्भव प्रयास किया। वास्तव में विज्ञान और धर्म एक–दूसरे के पूरक हैं। विज्ञान गति देता है जबकि धर्म दिशा देता है। विज्ञान चरण देता है परन्तु धर्म दृष्टि देता है ताकि चरण को दिशा मिले। अन्यथा मानव भटक जायेंगा। विज्ञान के द्वारा विकास हो, आवश्यक है परन्तु उनके साथ आध्यात्मिक दृष्टि भी बहुत आवश्यक है।

कूट शब्द – मुदिता, सर्वजन हिताय, सम्यक् वाक् , सुत्तपिटक, विनयपिटक, अभिधम्मपिटक, प्रज्ञा तथा निर्वाण परमार्थ ज्ञान और परमार्थ ज्ञान को पाने वाले स्वयं गौतम बुद्ध का परमार्थ ज्ञान वह है जो मनुष्य को मानवता का पाठ पढाता है। मानव को दुःखों से मुक्ति दिलाता है और बुद्धत्त्व प्राप्ति की ओर उन्मुख करता है। तथागत ने देशना की, कि 'चार आर्य सत्य' हैं – (1) दुःख – संसार दुःखमय है। सुख के नष्ट होने का भय भी दुःख ही है। (2) कारण – दुःखों की उत्पत्ति का कारण अवश्य होता है। (3) निवारण – दुःखों के प्रत्येक कारण का

निवारण अवश्य होता है। (4) मार्ग – दुःखों के प्रत्येक कारण के निवारण का मार्ग अवश्य होता है। 'अष्टांगिक–मार्ग' दुःखों की उत्पत्ति के अनेक कारणों में से मूल कारण है – तृष्णा (सांसरिक मोह बन्धन)। तृष्णा का जन्म अविद्या (अज्ञान) से होता है। दुःख के कारणों के नाश के आठ मार्ग हैं – (1) सम्यक् दृष्टि – सम्यक् दृष्टि यथार्थ दृष्टि है। अविद्या के कारण भ्रम अथवा मिथ्या दृष्टि उत्पन्न होती है। शिक्षा से ही व्यक्ति चार आर्य सत्यों को पहचान सकेगा तथा सही (सम्यक्) और वास्तविक रूप में विषय–वस्तु को समझ पायेगा। सम्यक् दृष्टि से तात्पर्य है व्यक्ति को दृष्टिकोण सदैव ठीक रखना चाहिए। (2) सम्यक् संकल्प – विचार ही हैं जो प्राणी को पवित्र या अपवित्र बना सकते हैं। सद्विचारों में दृढ़ता का होना सम्यक् संकल्प है। (3) सम्यक् वाक् – अनुचित वचन का त्याग तथा संयमित वाणी सम्यक् वाक है। यह सम्यक् संकल्प का ही बाह्य रूप है। बैर से बैर का शमन नहीं होता किन्तु प्रीति से होता है। मन को शान्त करने वाला एक हितकारी शब्द हजार निरर्थक शब्दों से अच्छा है। (4) सम्यक् कर्मान्त – सद्कर्मो को अपनाते हुए पाप कर्मो का त्याग ही सम्यक् कर्मान्त है। वे कर्म ठीक कहे जाते हैं जिन्हें करने से न आपको और न किसी दूसरे को कष्ट हो। (5) सम्यक् अजीव – शुद्ध उपायों से जीविकोपार्जन करना सम्यक् अजीव है। जीवन निर्वाह के लिए ईमानदारी के साथ उचित व विधि सम्मत मार्ग का अनुसरण करना चाहिए। (6) सम्यक् व्यायाम – मन–मस्तिष्क में कुसंस्कारों व अशुभ विचारों को रोकने तथा सद्विचारों को ग्रहण करने का प्रयास ही सम्यक् व्यायाम है। यह मानसिक व्यायाम है। (7) सम्यक् स्मृति – ज्ञान विषयों को यथार्थ रूप में पुनः–पुनः याद करना सम्यक् स्मृति है। यर्थाथ रूप को भूल जाने से मिथ्या विचार जड़ पकड़ लेते हैं एवं तृष्णा की उत्पत्ति होती है तथा उसके अनुसार क्रियायें होने लगती है। तृष्णा (सांसरिक मोह बन्धन) ही आसक्ति (अति अनुराग/प्रेम) का कारण है। आसक्ति ही समस्त दुख व वियोग से मानव को घेरे हुए है। (8) सम्यक् समाधि – चित्त की एकाग्रता द्वारा निर्विकल्प ज्ञान की अनुभुति सम्यक् समाधि है। यह 'अष्टांगिक–मार्ग' के सात नियमों का सम्यक् अनुपालन करने से प्राप्त होने वाली वह अवस्था है जिसमें चित्त निर्मल व शान्त हो जाता है।

'ब्रह्म–विहार' के चार अंग हैं– दूसरों के हित की साधना करना मैत्री है। (विश्व बन्धुत्व की भावना की उत्पत्ति मैत्री से होती है।) दूसरों के पीड़ा का अनुभव करना करूणा है। (असीम दया और क्षमा करने की क्षमता करूणा से उत्पन्न होती है।) दूसरों के सुख से सुखी होना मुदिता है। (ईर्ष्या, द्वेष, काम, क्रोध इत्यादि मानवोचित अवगुण मुदिता से दूर होते हैं।) और दूसरों के प्रति समभाव रखना उपेक्षा है। (भेद–भाव की उपेक्षा कर आसक्ति रहित उदासीन भाव रखना चाहिए।) 'निर्वाण' निर्वाण दुखों के सर्वथा अवरोध की अवस्था है जो सम्यक् समाधि की चरम स्थिति है। जीवनकाल में तृष्णाओं का क्षय हो जाना उपाधि शेष निर्वाण है तथा अन्त–काल में जन्म–मरण के बंधन से मुक्त हो जाना निरूपाधि शेष निर्वाण है। बुद्ध के अनुसार निर्वाण का मतलब है – राग, द्वेष और मोह का अन्त न कि आत्मा का मोक्ष। 'मध्यम–मार्ग' 'अष्टांगिक–मार्ग' मध्यम–मार्ग है। इसमें आत्मासक्ति और स्वयं को कष्ट देना, दोनों की मनाही है। बुद्ध ने कहा था, मध्यम मार्ग ही उत्तम मार्ग है। अति से बचने का यह बुद्ध का संदेश मनुष्य को बहुत से विकारों से बचाता है। बौद्ध साहित्य में निर्वाण की उपमा, बुझे हुए दीपक से दी जाती है। तात्पर्य यह है कि दीपक के बुझ जाने के समान वेदनाओं का सदा के लिए समाप्त हो जाना ही निर्वाण है। महात्मा बुद्ध का कहना है कि भिक्षुओं! जिस प्रकार तेल और बत्ती के रहने से दीपक जलता है, तेल और बत्ती के समाप्त हो जाने से दीपक बुझ जाता है उसी प्रकार तृष्णा के क्षय से जीवन–मरण की क्रिया भी समाप्त हो जाती है. वेदनायें शान्त हो जाती हैं। अतः निर्वाण राग–द्वेष का क्षय है, तृष्णा का निरोध है अतः निर्वाण अभावात्मक है। बौद्ध साहित्य में निर्वाण का भावात्मक वर्णन भी उपलब्ध है जैसे निर्वाण को यहाँ अमृतपद की प्राप्ति बतलाया गया है परम् शान्ति की प्राप्ति कहा गया है।

सम्राट अशोक जब बौद्ध हो गये, तब उनका प्रश्रय पाकर बौद्ध–धर्म बहुत फैला। अशोक के समय में बौद्धों में मूर्तिपूजा न थी। बुद्ध का प्रतीक रिक्त – आतन, चक्र, कमल–पुष्प, चरण पादुका था। स्तूप में बुद्ध का धातु गर्भ रखकर पूजा करते थे। कर्मवाद के अनुसार बौद्ध यह नहीं मानते थे कि पूजा करने से बुद्ध वरदान देंगे किन्तु वे यह मानते थे कि बुद्ध का ध्यान करने से चित्त समाहित और विशुद्ध होगा, और पूजक अपने को निर्वाण के लिए तैयार करेंगा। मानव जीवन में विज्ञान उसकी प्रगति का आधार स्तम्भ है। विज्ञान के बिना मानव जीवन की कल्पना भी सम्भव नहीं है। मानव चाह कर भी विज्ञान से स्वयं को अलग नहीं कर सकता। प्रत्येक क्रिया – प्रतिक्रिया में विज्ञान शामिल है। विज्ञान विश्वसनीय ज्ञान उत्पन्न करता है। भौतिक जगत में मौजूद किसी भी वस्तु अथवा विषय के बारे में अध्ययन करना और प्रत्येक पहलू को सिद्ध करना विज्ञान है। विज्ञान का एक

उद्देश्य यह भी है कि समाज के रीति–रिवाज, परम्पराओं को वैज्ञानिक तरीके से जानना और अंधविश्वास को दूर करना। महायान बौद्ध धर्म में विज्ञान के अनेक पहलु जुड़े हुए हैं। बौद्ध धर्म एक वैज्ञानिक तथा तर्क की कसौटी पर खरा उतरने वाला धर्म है तथा समाज में व्याप्त कुरीतियों का शमन करने में अग्रणी है। महात्मा बुद्ध ने तात्विक समस्याओं को ज्यादा महत्त्व नहीं दिया, बल्कि दुःखों की व्यापकता और उसकी निवृत्ति की समस्या पर बुद्ध ने अपना ध्यान केन्द्रित किया। दुःख से निवृत्ति ही महात्मा बुद्ध का चरम उद्देश्य है। महात्मा बुद्ध के उपदेश त्रिपिटक में निहित हैं। जिसके अन्तर्गत सुत्तपिटक, विनयपिटक तथा अभिधम्मपिटक आते हैं। सरल शब्दों में कह सकते हैं कि सांसारिक जीवन दुःखों से परिपूर्ण है, दुःखों का कारण है, दुःखों का अन्त है और दुःख अन्त का उपाय है। बुद्ध ने मज्झिम निकाय में चार आर्य सत्यों की महत्ता को स्पष्ट करते हुए कहा है, इसी से अनासक्ति, वासनाओं का नाश, दुःखों का अन्त, मानसिक शान्ति, ज्ञान, प्रज्ञा तथा निर्वाण सम्भव हो सकते हैं।

साधारण मनुष्य मानवता का जो अर्थ समझते हैं बौद्ध धर्म में मानवता उससे उच्चतर है। बौद्ध धर्म सच्ची मानवता का संवाहक है, मानवीय गुणों का सम्पोषक है। बोधि–सत्त्व अवस्था इसी मानवता का मूर्तिमान रूप है। जहाँ मानव का स्वरूप अत्यन्त विस्तृत होकर प्राणीमात्र में फैल जाता है और उसके सभी कार्य प्राणीमात्र के लिए हितकर और सुख–सम्पादक हो जाते हैं। भगवान गौतम बुद्ध जातक ग्रन्थों के अनुसार अपने पूर्व जन्मों में बोधि सत्त्व अवस्था में रहे। उस अवस्था में उन्होंने जीव–कल्याण के लिए अपने स्वार्थ का त्याग किया और परार्थ के लिए प्राणों का बलिदान भी किया। बोधि सत्त्व अपनी ही दुःख निवृत्ति के लिए बुद्धत्व की प्राप्ति नहीं करना चाहते सब जीवों के क्लेश नाश का उद्देश्य लेकर वह इस मार्ग पर बढ़ते हैं।

गौतम बुद्ध ने समाधिस्थ होने के लिए साधक को ध्यान का मार्ग दिया है। विपश्यना ध्यान के सम्बन्ध में उन्होंने जो ज्ञान दिया है– वह आज भी साधकों के बीच लोकप्रिय है। भगवान गौतम बुद्ध का हृदय पवित्र था, ज्ञान से प्रकाशित था और लोगों के प्रति करुणा से भरा था। यही कारण है कि लोगों ने उनके ज्ञान की पूजा की और उन्हें भगवान का अवतार मान लिया। इसी प्रकार बौद्ध दर्शन में कर्मवाद को मान्यता प्रदान की गयी है। भगवान गौतम बुद्ध अतुलनीय हैं। सर्वत्र स्वार्थ का ही बोलबाला है नैतिक मूल्यों का हास हो रहा है। इस विषम और दूषित वातावरण को शुद्ध और परिष्कृत करने में महात्मा बुद्ध का दर्शन ही सहायक है। महात्मा बुद्ध के बताये हुए मार्ग पर चलना होगा। महात्मा बुद्ध का दर्शन भौतिकवाद और अध्यात्मवाद में सामंजस्य स्थापित करने वाला दर्शन है। बुद्ध का दर्शन सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय का दर्शन है। अतः महात्मा बुद्ध का दर्शन वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अत्यन्त ही उपयोगी और आवश्यक है। गौतम बुद्ध द्वारा मानव जाति को दिये गये उपदेश बौद्ध धर्म में निहित हैं। बुद्ध की देशना ही बौद्ध धर्म है और समय–समय पर स्थान–स्थान पर उनके द्वारा दिया गया ज्ञान वास्तविक बौद्ध धर्म है। पूरी मनुष्य जाति में उनके जैसा महिमापूर्ण नाम दूसरा नहीं है। उन्होंने जितने लोगों के हृदय की वीणा को बजाया है, उतना किसी और ने नहीं। उनके माध्यम से जितने लोग जागे और जितने लोगों का आध्यात्मिक उन्नयन हुआ, उतना किसी और के माध्यम से नहीं हुआ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :–

1. सुप्त पिटक–लाल सिंह गौतम Publisher B.R Publishing corporation ,ISBN-9789380852522
2. विनय पिटक–महापंडित राहुल सांकृत्यायन , Publisher-Samyak Prakashan ISBN-9789388487139,Edition-2018
3. अभिधम्म दर्शन–जे0 कस्यप Publisher-Bharatiya vidya Prakashan ,Varansi,Edition-2018,ISBN-9788121703277
4. बुद्ध चरित–अश्वघोष–सम्पादक अनुवादक सूर्यनारायण चौधरी, Publisher-Motilal Banarsidass,Edition 1Jan 2008 ISBN-812020822153
5. मिलिन्द प्रश्न–भिक्षु जगदीश कश्यप, Publisher-Gautam book center,Delhi,Edition-2022 ISBN-9788187733519
6. त्रिपिटक ग्रंथ माला–चर्यापिटक–डॉ0 भिक्षु धर्मरत्न, Publisher-Siddharth books,Edition –First 2013,ISBN-9789381530412
7. बुद्ध की तलाश में चीनी बौद्धयात्री–हेन्सांग की भारत यात्रा लेखक हेन्सांग, अनुवादक ठाकुर प्रसाद शर्मा संपादक शांति स्वरूप बौद्ध प्राक्थन–डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद सिंह , प्रकाशन –Samyak Prakashan Edition-1Jan 2019,ISBN-108194430925

8 प्रारम्भिक बौद्ध दर्शन एवं मानववाद – डॉ० रामनारायण शर्मा :Publisher Eastern book Linkers,Edition-2013,ISBN-9788178542478
9 विश्व कल्याण और बौद्ध दर्शन–प्रधान संपादक डॉ0 ओकार नाथ मिश्र संपादक–डॉ0 इन्द्रजीत सिंह, Publisher Raj Publications ISBN-9788192222783,Edition-2012
10 बौद्ध धम्म दर्शन–डॉ0 आर0पी0 सन्त भास्कराचार्य Publisher Deep Publications Agra,Edition 2001
11 बौद्ध धर्म और लोककल्याण–मनीषा सिंह–Publisher Kala Prakashan,Edition-2013,ISBN-9789381698891
12 बौद्ध धर्म दर्शन–आचार्य नरेन्द्र देव, Publisher-Motilal Banarsidass Publisher-PVT LTD,Edition,2015
13 धर्म के बैज्ञानिक गौतम बुद्ध (जीवन दर्शन) तेजपाल सिंह वेदपाल सिंह Publisher-Buddhist World Press,Edition,2018
14 बौद्ध दर्शन मे निर्वाण का स्वरूप एक मूल्यांकन–डॉ0 श्रीमती अनामिका गुप्ता, Publisher-Nation Press,Edition (23Jan2020)
15 बौद्ध आयु विज्ञान – बौद्ध चिकित्सा पद्धति– डॉ. राजेन्द्र प्रसाद शाक्य Publisher-Lokchetna Prakashan,First,Edition(1Jan2016)
16 बुद्ध निर्वाण की राह पर – शिव के0 कुमार अनुवादक–प्रभात के सिंह ,सहः ललित अग्रवाल Publisher-Story Side in Published-2020
17 बुद्ध का आत्म कथन– सुधाकर देश पांडे, Publisher-sarva-seva sangh Prakashan,Varanasi,edition-2018
18 गौतम बुद्ध का जीवन और दर्शन डा0 राधाकृष्णन Publisher-Rajpal &Sons,Jan12014,ISBN 8170282713
19 कीर्तिसिधें,बुद्ध दास पी0 (संपादक) 1993) बौद्ध धर्म और विज्ञान, मोतीलाल बनारसीदास
20 "आधुनिकता और वैज्ञानिकता बौद्ध धर्म का प्रवचन" जनरल ऑफ द अमेरिकन एकडेमी आफॅ रिलिजन 4नवम्बर (2004)
21 बौद्ध मनोविज्ञान का एक परिचय , डी0 सिल्वा पदमसिरी (2005) चौथा संस्करण , पालग्रेव मैकमिलन
22 उत्तर भारत में बौद्ध धर्म के विकास का अभिलेखिक अध्ययन– डॉ0 रमेश प्रकाश चतुर्वेदी, Publised-Swati Publications Delhi,Ediotion,2022 ISBN-9789381843369
23 अशोक के धर्म अभिलेख–संपादक जर्नादन भट्ट – Publisher-Publications-Division.Goverment of India,Edition-2015, ISBN-9788123019956
24 अजन्ता एलोरा – यशपाल जैन Publisher-Sastasahitya mandal Prakashan,Edition-2008-ISBN-9788173092626
25 चैत्या– नरेश मेहता Publisher-Bharatiya Janpith Vani Prakashan,Edition-2nd 2015-ISBN-9789326354448